पंडित दीनदयाल उपाध्याय

एकात्म मानव दर्शन—विविध आयाम

संपादक : मनोज कुमार सक्सेना

Scanned by CamScanner

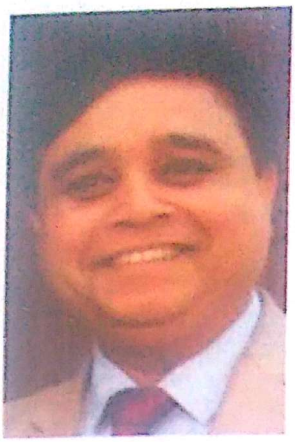

आचार्य मनोज कुमार सक्सेना हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के शिक्षा स्कूल के अधिष्ठाता तथा अध्यापक शिक्षा विभाग के अध्यक्ष हैं। उन्होंने वाणिज्य निष्णात तथा शिक्षा निष्णात की उपाधि तथा शिक्षा विषय में विद्यावाचस्पति की उपाधि महात्मा ज्योतिबा फुले विश्वविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश) प्राप्त की है। वे अध्यापक शिक्षक के रूप में गत 20 वर्षों से विभिन्न संस्थानों में कार्यरत रहे हैं। शिक्षा में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी, जनजातीय शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा उनकी रुचि तथा विशेषज्ञता के क्षेत्रों में सम्मिलित हैं। उनके दिशा निर्देशन में पांच शोधार्थियों ने अपनी विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की है तथा वर्तमान में छह शोधार्थी अपना शोध कार्य कर रहे हैं। उन्होंने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्त पोषित एक राष्ट्रीय शोध परियोजना (2014) 'अनुसूचित जनजातियों की शैक्षणिक अवस्था : प्राप्तियां और चुनौतियां' को हिमाचल प्रदेश के शोध निर्देशक के रूप में पूर्ण किया है। उन्होंने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्त पोषित एक और प्रमुख शोध परियोजना (2017) को पूर्ण किया है। वर्तमान में एशिया के कॉमनवेल्थ एजुकेशनल मीडिया सेंटर, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित मुक्त शैक्षिक स्रोत के विकास हेतु एक परियोजना पर वे अभी कार्यरत हैं। वे हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला की कार्यकारिणी परिषद् तथा अकादमिक परिषद् के सदस्य तथा शिक्षा स्कूल के स्कूल बोर्ड के अध्यक्ष तथा अध्यापक शिक्षा विभाग की पाठ्य समिति के अध्यक्ष भी हैं।

उनके द्वारा अब तक 5 पुस्तकें तथा 75 शोधपत्र विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के जर्नलों में प्रकाशित किए गए हैं। उन्होंने भारत में तथा भारत के बाहर विभिन्न सेमिनारों में लगभग 72 शोध पत्रों को प्रस्तुत तथा उनमें अपना योगदान दिया है। उन्होंने भारत के विभिन्न प्रदेशों में बहुत सी राष्ट्रीय सेमिनारों में मुख्य वक्ता के रूप में अपना उद्‌बोधन दिया है। वे एम.एड., बी. एड. तथा डी.एड. कार्यक्रमों को मान्यता देने के लिए अध्यापक शिक्षा परिषद् की विजिटिंग दल के सदस्य हैं। उन्होंने शैक्षिक तथा सामाजिक कार्यों से थाईलैंड तथा नेपाल देशों की यात्रा की है।

इन अकादमिक कार्यों के अतिरिक्त उन्हें भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा 1988 में राष्ट्रपति स्काउट से अलंकृत किया गया। वहे रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के रोटरी युवा नेतृत्व पुरस्कार 1989 से सम्मानित हैं।

अनामिका

₹ 800

ISBN 978-81-7975-940-0

Scanned by CamScanner

19. Pandit Deendayal Upadhyay: Skill Oriented Education 210
Prof. Manoj Kumar Saxena & Dr. Rakesh Rai

20. Deendayal Upadhyaya's Life and Mission 226
—Dr. Suresh Kumar Soni

21. Relevance of Philosophy of Pandit
Deen Dayal Upadhyay in Current Scenario 236
—Dr. Vishal Sood

22. Political Philosophy of Deendayal Upadhyaya:
Contemporaneity and Discourse 241
—Dr Kanwar Chanderdeep Singh

23. Integral Humanism: Only Hope of Future:
A Sociological Analysis 252
—Dr. Mohinder Slariya

Scanned by CamScanner

22 Political Philosophy of Deendayal Upadhyaya: Contemporaneity and Discourse

Dr Kanwar Chanderdeep Singh

The idea and ideation of Hindu nationalism has manifested itself in multifarious domains of body politic of India since its inception in the pre-independence era. The philosophy of Hindutva though espoused by VD Savarkar has constantly been rationalized and restructured by various other ideologues without compromising on its essentials and fundamentals. Among all others, the contribution of Pandit Deendayal Upadhyaya stands exceptional because of the sheer element of contemporaneity in its discourse. The political avatars of Hindutva way, namely Bhartiya Janta Party (BJP) and erstwhile Bhartiya Jana Sangh (BJS) proved the case in point because the former has out rightly declared the incorporation of the thoughts of Integral Humanism in its policies and programs and the political configuration and eventful existence of latter could not have been possible but for Deendayal Upadhyaya.Therefore this paper for the sake of concision attempts to delineate some of major points in the political philosophy of a man whose journey from a humble *swayamsevak* to an institution in him and whose beacon stature has brought *Hindutva* from the periphery of politics to centre stage. It is also glanced whether the contemporary political scenario and its associated ailments have found a solution in his philosophy.

Introduction

"Deendayal Upadhyaya is to the BhartiyaJanta Party what Mohandas Karamchand Gandhi was to Congress" viewed R. Balashankar, a former editor of the *Organiser,* the mouthpiece of

Scanned by CamScanner